ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

# पशुओं में डेगनाला रोग- कारण एवं निवारण

*डॉ संजय कुमार मिश्र*

***उप-निदेशक पशुधन विकास, पशुपालन निदेशालय उत्तर प्रदेश लखनऊ***

डिगनाला रोग एक दुर्लभ और गंभीर रोग है जो मुख्य रूप से भैंसों और कभी-कभी गायों को प्रभावित करता है। यह रोग आमतौर पर फफूंद-युक्त चारे (खासतौर पर धान या गेहूं के पुआल) के सेवन के कारण होता है। इसका नाम पंजाब, के डिगनाला क्षेत्र से लिया गया है, जहां इसे पहली बार देखा गया था। इसे पुंछकटवा रोग भी कहते हैं। यह रोग अक्सर वर्षा ऋतु के अंत तथा सर्दी के मौसम में अधिक पाया जाता है। दुधारू पशुओं में इस बीमारी की संभावना नवंबर से फरवरी के बीच अधिक रहती है। इस बीमारी में पशुओं के कान, पूंछ एवं खुर सूखने लगते हैं और सडकर गिर जाते हैं। दुधारू पशुओं में पूंछ में सडन एवं गलन हो जाती है। पशु चारा खाना बंद कर देता है एवं कुछ दिनों में कमजोर हो जाता है।

**कारण**

•कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि यह बीमारी सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण होती है। परंतु इस बीमारी का असली कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है। रोग का मुख्य कारण चारे या पुआल का गीले या नम वातावरण में भंडारण एवं लंबे समय तक नमी के संपर्क में रहने वाला चारा।

•डेगनाला एक फफूंद ( फंगस) से होने वाली बीमारी है जिसमें फुसेरियम की विभिन्न प्रजातियां, एसपरजिलसस फलेवस एवं पेनिसिलियम नोटेटम आदि शामिल है।

•यह रोग फफूंद के माइकोटोक्सीन युक्त पुवॉल (धान का भूसा) के खाने से होता है।

•यह रोग अधिकांशत नमी वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।

•यह रोग प्राय: धान उगाने वाले क्षेत्रों में बहुतायत से मिलता है।

•सभी आयु वर्ग के पशु इससे प्रभावित हो सकते हैं।

•बरसात के महीनों में आद्रता और तापमान युक्त स्थिति के तहत सैप्रोफिटिक फंगस खुले मैदान में रखे पुवाल अर्थात पैरा पर काले धब्बों के रूप में विकसित होता है।

•सर्दियों में हरे चारे की कमी के कारण इस संक्रमित पुवाल को अधिक मात्रा में पशुओं को खिलाया जाता है तो पुवाल में उत्पन्न हुए माइकोटोक्सीन के कारण डेगनाला बीमारी उत्पन्न होती है।

•यह मायकोटॉक्सिन रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे रक्त संचार कम हो जाता है। ऑक्सीजन की कमी के कारण प्रभावित अंगों में गैंग्रीन और त्वचा का मरना शुरू हो जाता है।

## लक्षण

•भूख में कमी, दुग्ध उत्पादन में लगभग 15% की कमी, पैरों (घुटने के नीचे) में सूजन चलने में कठिनाई या लंगड़ापन।, रूखापन और खुरदुरे बाल , त्वचा पर घाव या काले पड़ने वाले हिस्से। इस बीमारी से ग्रसित होने का प्राथमिक लक्षण है।

•इस रोग से ग्रसित पशु की पूंछ के छोर के बाल झड़ जाते हैं व डुंडी पूंछ पर गलन होने लगती है और पूछ अंत में सडकर गिर जाती है।

•इस बीमारी में पशुओं के कान, पूछ, खुर एवं अंडकोष के किनारे पर भी गलन प्रारंभ हो जाती है और यह अंग सूखने लगते हैं और अंत में गलकर सड जाते हैं।

## निदान

•रोग का इतिहास जानकर ,लक्षणों एवं प्रभावित चारे का अवलोकन के आधार पर किया जाता है। ।

•पुवाल का प्रयोगशाला परीक्षण करने पर उसमें फफूंदी युक्त विष की मात्रा व उपस्थित ज्ञात की जा सकती है।

•प्रयोगशाला में एचपीएलसी अथवा एचपीटीएलसी विधि से विष का पता लगाया जा सकता है।

उपचार

•डेगनाला रोग के लक्षण प्रकट होने पर तत्काल ही नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करें अथवा 1962 पर कॉल करें। कोई भी उपचार पशु चिकित्सक के परामर्श से ही करना चाहिए।

•शरीर के संक्रमित भागों को नीम के पत्तों को उबालकर इस गुनगुने पानी से घाव को साफ करें। इसके पश्चात 2% नाइट्रो ग्लिसरीन से इसकी ड्रेसिंग करें अथवा अन्य एंटीसेप्टिक मलहम(**Himax / Loraxane)** लगायें।

•संक्रमण की रोकथाम के लिए अधिक समय तक क्रियाशील रहने वाली प्रतिजैविक औषधियां जैसे ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन एल ए / बेंजाथीन पेनिसिलिन / एनरोफ्लाक्सासिन एल ए का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह से करें। धान के संक्रमित पुवाल (दूषित चारे)को खिलाना तत्काल बंद करें।

•बीमार पशुओं को पेंटासलफ औषधि (**Ferrous Sulphate-**166**gm, Copper Sulphate-**24**gm,Zinc Sulphate -**75**gm,Cobalt Sulphate -**5**gm, Magnesium Sulphate-**100**gm)** 60 ग्राम पहले दिन खिलाएं तथा उसके बाद 15-20 दिनों तक 30 ग्राम प्रतिदिन खिलाएं।

•गंभीर मामलों में सड़े हुए हिस्सों को हटाने (अंग काटने) की आवश्यकता हो सकती है। गलन भरी एवं सुखी पूंछ को सल्य क्रिया द्वारा काटकर अलग किया जा सकता है तत्पश्चात एंटीसेप्टिक ड्रेसिंग करना चाहिए।

•दर्द एवं सूजन को कम करने हेतु मिलोक्सीकेम अथवा टोलफेनामिक एसिड नामक औषधि का प्रयोग करें।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

•फफूंदी नाशक के रूप में पोटेशियम आयोडाइड अथवा सोडियम आयोडाइड का प्रयोग किया जा सकता है।

## रोकथाम/ बचाव:

उपचार से बचाव हमेशा बेहतर होता है। पशुपालक बंधु कुछ मुख्य बिंदुओं पर ध्यान दें-

•धान के पुवाल को पूरी तरह सुखाकर ही भंडारित करें, विशेष रूप से नमी वाले क्षेत्रों में यह अवश्य ध्यान रखें।

•पशुओं को फफूंदी लगा हुआ चारा दाना एवं भूसा कदापि नहीं खिलाएं।

•लंबे समय से रखा हुआ पुवाल न खिलाएं बल्कि पुवाल को हमेशा पानी से धोकर खिलाएं।

•प्रोटीन तथा विटामिन युक्त आहार पशुओं को देते रहना चाहिए। पशुओं को नियमित रूप से 50 से 100 ग्राम खनिज लवण मिश्रण प्रतिदिन दें।

•डेरी फार्म को हमेशा स्वच्छ रखें और पशुओं को साफ स्थान पर रखें। गौशालाओं में नियमित रूप से फिनाइल एवं चूने के पानी का छिड़काव करें।

•डेगनाला रोग से बचाव के लिए एक ग्राम सोडियम हाइड्रोक्साइड को 400 मिलीलीटर पानी में घोलकर उसे 20 किलोग्राम पुवॉल पर छिड़काव कर पशुओं को खिलाएं साथ में 200 ग्राम तीसी / **Flex seed (Alsi)** तथा 200 ग्राम गुड़ खिलाएं।

## डिगनाला रोग के कारण होने वाले नुकसान:

•दूध उत्पादन में कमी, इलाज का खर्चा।, पशुओं की मृत्यु से आर्थिक नुकसान

**निष्कर्ष:** डिगनाला रोग को उचित चारे के प्रबंधन से रोका जा सकता है। समय पर निदान और उपचार से पशुओं की जान बचाई जा सकती है और आर्थिक नुकसान को कम किया जा सकता है।